जेडीइइ / ऐफ–6 / 2024

शूकरों में मैस्ट्राइटिस–मेट्राइटिस–एगैलेक्टिया सिंड्रोमः फार्म–स्तर पर प्रबंधन और रोकथाम

यू.के. डे

भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर–243 122 (उ.प्र.) भारत

मैस्ट्राइटिस / मेट्राइटिस–एगैलेक्टिया (एम.एम.ए.) सिंड्रोम या पोस्टपार्टमडिस्गैलेक्टिया सिंड्रोम (पी. पी.डी.एस.) आमतौर पर इष्टतम दूध की कमी के कारण 48 घंटों के भीतर शूकरों में देखा जाता है। चिकित्सकीय रूप से सिंड्रोम की विशेषता भूख की कमी, एगैलेक्टिया, सुस्ती, बेचैनी, बुखार और मेट्राइटिस के साथ या बिना स्तनग्रंथियों की सूजन है। यह बीमारी किसी भी शूकर के झुंड की एक गंभीर समस्या है क्योंकि भूख और आंत्रशोथ और निमोनिया जैसे द्वितीयक संक्रामक रोगों से नवजात शूकर की मृत्युदर तेजी से और उच्चदर की ओर ले जाती है। एमएमए / पीपीडीएस का प्रसार अस्वास्थ्यकर और खराब फर्श की स्थिति में शूकर में 10–50% तक होता है। एमएमए से नवजात शूकर के बच्चे के नुकसान को भी शूकर उत्पादन में आर्थिक नुकसान का एक प्रमुख कारण माना जाता है।

एमएमए के संभावित कारण

❖ प्रबंधन और पोषण संबंधी कारक :

- गर्भावस्था के महीने में थोड़ा व्यायाम
- उच्चपोषण घनत्व राशन
- गर्भावस्था की अंतिम तिमाही में अधिक भोजन
- फार्म की खराब स्वच्छता की स्थिति
- फारोइंगपेन को पर्याप्त स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति नहीं होना
- आनुवंशिक कारक जैसे कि शूकरों की विशेष नस्ल अक्सर एम.एम.ए. के प्रतिसंवेदनशील होती है।
- फ़ारोइंगपेन का फर्श खराब होना
- फारोइंग के दौरान अत्यधिक मानव हस्तक्षेप
- फारोइंगपेन में अत्यधिक गर्म या ठंड से तनाव
- संक्रामक कारक
- कोलीफार्म या अन्य ग्राम–नेगेटिव बैक्टीरिया के पहले से मौजूद संक्रमण
- ग्राम–नेगेटिव बैक्टीरिया से एंडोटॉक्सिन हाइपोथैलेमस पर कार्य करता है जो प्रोलैक्टिन रिलीज को कम कर देता है जिसके परिणाम स्वरूप दूध उत्पादन में उल्लेखनीय गिरावट आती है।

एम.एम.ए. की पहचान कैसे करें?

❖ एमएमए/पीपीडीएस के साथ शूकरों मे निम्नलिखित संकेत/संकेत देखे जाते हैं

- सिंड्रोम आमतौर पर 12–48 घंटों के भीतर होता है
- एनोरेक्सिया पहला संकेत है उसके बाद अवसाद और/या बेचौनी देखने को मिलती है।
- हाइपोगलैक्टिया या दूध का पूरी तरह से बंद हो जाना
- शूकर के बच्चे की स्थिति में धीरे-धीरे कमी और हाइपोग्लाइसीमिया के कारण दैनिक जीवित वजन में कमी इसकी पहचान का सबसे सरल तरीका है।
- फारोइंग पेन के कोने में जमावड़ा और शूकरों के खुरदरे बाल बहुत आम हैं।

- कब्ज या मल का सख्त होना भी आमतौर पर देखा जाता है।
- तापमान की उच्चवृद्धि (> 103 °F)
- स्तन ग्रंथि के लाल होने के साथ या बिना सूजन देखी जा सकती है
- सूजा हुआ योनि या योनिस्राव भी देखा जा सकता है
- डायरिया और न्यूमोनिया
- अंत में, सभी शूकर जन्म के 72 घंटों के भीतर भूख से मर जाते हैं

नैदानिक प्रबंधन

❖ एमएमए से प्रभावित मादा का प्रबंधन

- सबसे पहले, बुखार, डायरिया और दूध चूसने के क्षमता कि जांच करें
- गैर–स्टेरॉयडल शोथरोधी दवा (NSAIDs) एवं एंटीहिस्टामिनिक को दें

- यदि मैस्ट्राइटिस / मेट्राइटिस का संकेत स्पष्ट है तो रोगाणुरोधी दवा दें।
- दूध उतरने के लिए छोड़ने के लिए ऑक्सीटोसिन हर 1 घंटे के अंतराल पर 25–30 IU कि दर से दें।
- डेक्सामेथासोन को 20 मिलीग्राम / मादा कि दर से 3 दिन दें।
- 5% डीएनएस के बाद कैल्शियम बोरोग्लुकोनेट को देना चाहिए, साथ ही मल्टीविटामिन इंजेक्शन दें

एमएमए से प्रभावित पिगलेट का प्रबंधनः

- व्यक्तिगत शूकरों को मौखिक रूप से 50% गोजातीय दूध में ग्लूकोज का बार–बार खिलाना
- हाल ही में प्रशव हुई अन्य मादा के साथ पालन–पोषण (अधिकतम 2–3 / मादा)

रोकथाम

- फारोइंग पेन में गर्भवती शूकरों को स्थानांतरित करने से पहले इसको खाली, साफ, कीटाणु रहित किया जाना चाहिए।
- गर्भवती शूकरों को क्रेट में रखने से पहले साबुन और पानी से धोया जाना चाहिए।
- व्यायाम के लिए उचित प्रबन्ध होना चाहिए
- मादा को प्रशव के 2 सप्ताह पहले कि क्रेट और फारोइंग पेन में अनुकूलन के लिए रखा जाना चाहिए जिससे तनाव मुक्त वातावरण बन सके
- क्रेट और फारोइंग पेन में प्रवास के दौरान भोजन में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं करना चाहिए परन्तु अधिक खाने से बचाना चाहिए। उच्च फाइबर वाला आहार आदर्श होता है।
- फारोइंग के समय वातावरण को शांत रखें।

संरक्षण एवं निर्देशन	:	**डॉ. रूपसी तिवारी**
सम्पादक	:	**डॉ. अखिलेश कुमार**, वरिष्ठ वैज्ञानिक, औषधि विभाग **डॉ. रुपसी तिवारी**, संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा
प्रकाशक	:	**डॉ. त्रिवेणी दत्त**, निदेशक एवं कुलपति, भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर
संस्करण	:	2024
मुद्रक	:	बाइट्स एण्ड बाइट्स, बरेली